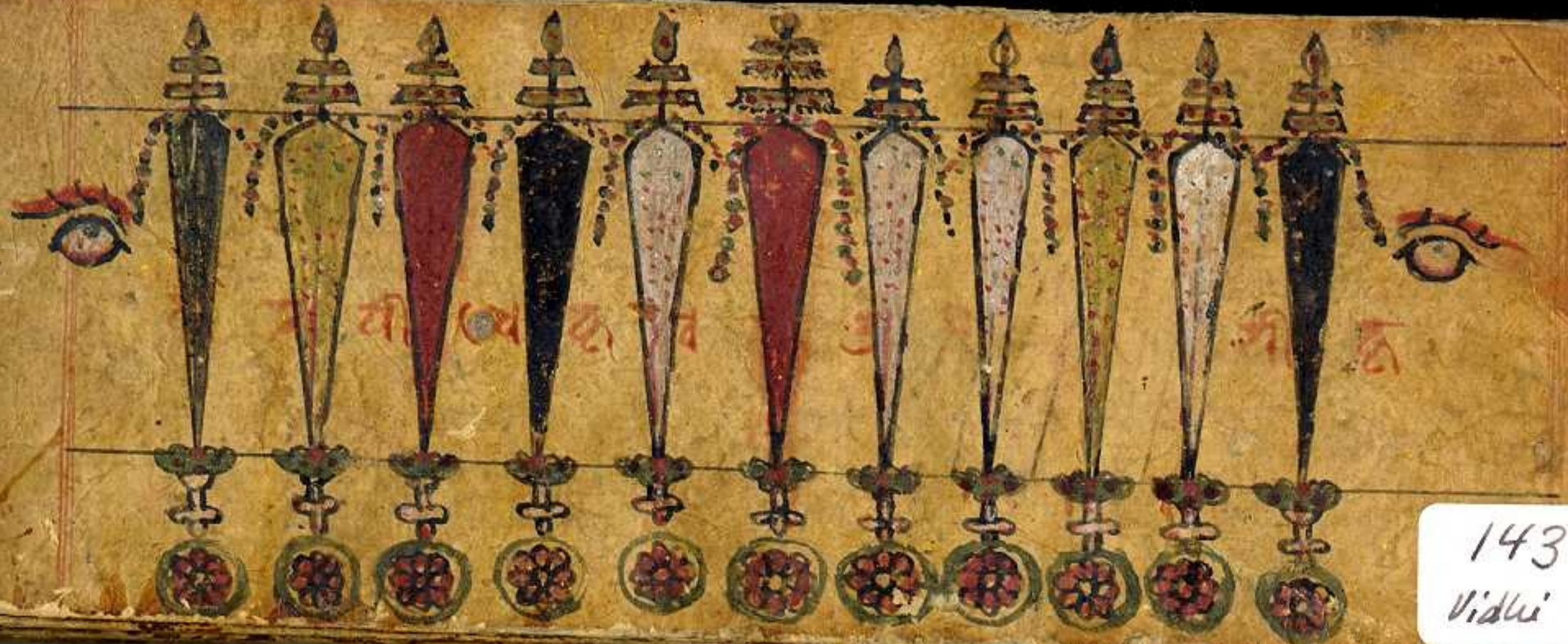
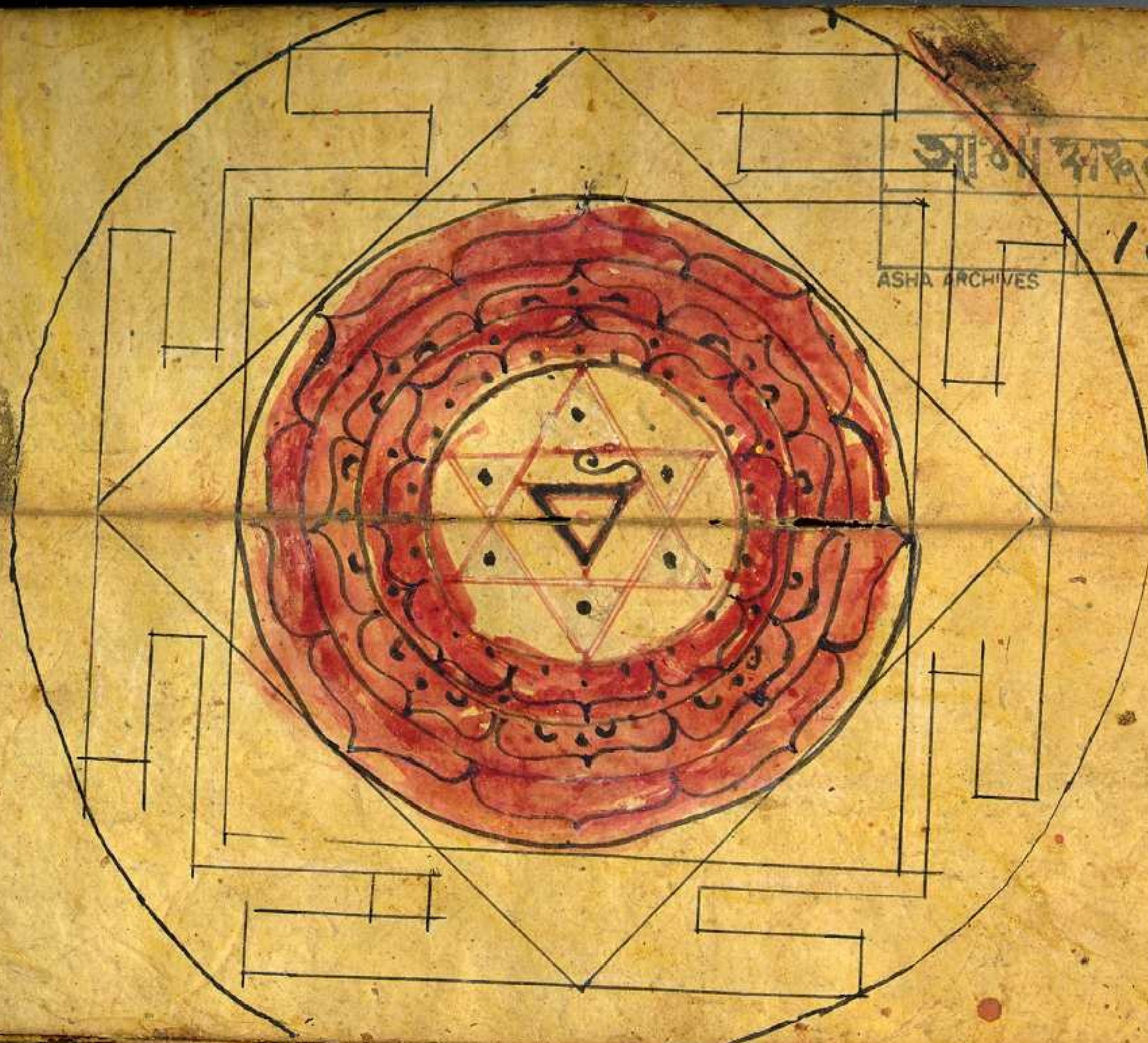




143
Vidui



आशा दारुवाशि

18481

ASHA ARCHIVES

लिया
 वना
 नाहोन
 मयीक
 धय
 स्वायना
 रुयक
 उजालि
 तनवान



श्रीदयवधुं खम् ॥
 रगवति यति मा



श्रीकवान
 रधक
 रमाहानि
 रनायखि
 रकैस
 रकात
 रदोद्यम
 रकाहान



ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ ततः ४ यात्राय ह स्थायन विधि निखन ॥ आ
दीयद्वाय नथ धिलिवायः (थन हितयः यदा कृषिं वाः शिका धा कृ
तिं वा तयः थया दवनः थं दिति वायः थन लिग कालं मास दू कायः वि
धि (थं निष्कृतादिः सत रुं ता दया सगुलः चन्दन सिंदूर सगुलः प्र
रुं आ प्रतियुति स्का ॥ थन ला सार्ज अतः थय सतः थन लिन वनाय
हाल आत ॥ मालना स अरु विन थन ॥ न्यास ॥ अष्ट ६ अ मती न्यानः

अर्घ्यागु स थका व अरु विन थन यृच्चा दिन ॥ मरुं यथा ॥ नै अं आ नू
दव क्षु अया यृग ॥ ४ ॥ म (ध मूल ॥ ॥ नै म नू रुया अया यृग ॥ ६ ॥ म
(ध मूल ॥ ॥ वै अं व द्वाय (धिया यृग ॥ ७ ॥ म (ध मूल ॥ ॥ ऊ
ये मान स्य रि स्व द्या स न तय क आ यड (थं ॥ यट वा स न वा यड (थं
॥ अंग विन ड (थं थन ॥ विन यरु मान स्य ग क्का स्व का वा न यक ॥ मूल
मनु न हात्र ॥ ७ ॥ स व कृति ॥ हिन थाम ॥ (थमा दवन थ धिलि वाय ॥

यद्वासन ॥ अङ्गुलित्रय (थं धनमालनासनशुका ॥ लंखविय ॥ यत्रि
त्रात्रमालकायार्गं यद्वासनचाय ॥ वरिष्ठाया नवलियत्रिवा लर्थमा
त्रामालकाय ॥ चरसिन्दुवसिक्कात्रसकचकावज्जुकरदाहवर्गज्ज
जमकानवत्रागस ॥ ॥ चन्दनादिसकचसखत्रखानरा ॥ ॥ यत्र
वलि शिवलिङ्गगुपीवलि आदिनवाय ॥ धनधूनकाव यजुमाः
ननसूर्यायिआचक ॥ यष्यशुर्न ॥ आचायिनसूर्यायि ॥ अखः

सुमलुलादिगुपूनमस्कारं ॥ न्यासायसाहयूजात्मयूजा ॥ धनविलः
कालवत्रज्जकाव ॥ मालनीय ॥ ॥ यत्रवलि शिवलि विधि (थं) नः
वात्मा मूलशुकाः विष्णुमथुलिसयूजाशुकाः यलित्वा लमालकाः
शुक्लशुका ॥ धनवलिभाल ॥ रुक्कादि अमिताभदि ॥ यद्वात्रु
दि ॥ रुयादि ॥ वक्कादि ॥ ययागदि ॥ समयवलि अज्जनादि वतीषी
चरुषष्टि चवसति माहावलि ॥ धूपदीपजयमुनि यथैकि माहा

माया ॥ अङ्ग गन्धादि ॥ चाक यूजा मालाभस ॥ तथैव ॥ नृकानक ॥ चन्द
नसिन्दुनसगुह ॥ धीवृदि ॥ न्यासलिकाग्रविमर्कुन ॥ ॐ नित्यात्राय
हस्तयनविधिः ॥ ४ ॥ ॥ दगुलिवलिङ्गाकावायथाययाधानमाल
साः समानसासकलं अर्थ ॥ ॥ गगानियकमविधिः ॥ स्ना
नकुलनअलिस्नानचन्दनादिगः वडिस्नानवलितनः यथैव
ऊर्नयात्रक ॥ आचार्यनसूर्याद्यैवधुमधुलगुननसस्कारं ॥ न

साध्याययूजात्मयूजा ॥ मालनी ॥ यथैवलिखितलिनवात्सामूलरु
का ॥ विष्णुमथलिलिसयूजाइकायलिवालमालकासुअंऊलि
इका ॥ वलिनूदचधुदिजयादिचक्षादिअहितासुदिममय
वलि ॥ धूयदिपुजयसुनिः आधीवृदिममयशाश्रु ॥ विमर्कुन ॥ मृ
युसाशि ॥ ॥ ॐ नित्ययायलियातिविधिः समाकं ॥ ४ ॥ ॥ ४ ॥
गगायटस्नायनमालसातिथ्यालखनः कलशायामकनयूजा

ॐ नमः ॥ धृति काये ॥ इत्थं न विधि लिख्यते ॥ ततः स्नान कल धावनं
 ॥ यथा कृति यद्वा समनो य ॥ कंस धलित लोभ ॥ कल धावनं चिसतः
 यः यथा मृतः मद्या मांस मृजा या यः कय धलित सवा सवा ययुर्वीदि
 ना ॥ य ॥ ध (था वा) आ ॥ नः द (मल धा) ने वा स वा नः यदाः वाः सताः
 इनाः ॥ श्री आ कृतः सः सिधु ॥ ॥ निव द्य वलिता ॥ ॥ ॐ मया दिगु न
 नमस्कारं न्यासा र्थ यागात्स मृजाः रुत ॥ ॐ नमः ॥ दद्यादि त्यास ॥ ऊः
 ला र्थ यागात्स मृजा ॥ रुत वलि ॥ ॐ नमः ॥ रुता य विविध काले शु विदिवा

कप्रिक गायता तगत्र वा सिन्या न गृथ्य नु निवा रूया ॥ नै ॥ ॐ नमः ॥ वलि
 गृध्रं रखा ला ॥ न नदि ने नमः ॥ ॥ नै ॥ आ धाना दि ॥ ॐ नमः ॥ वलि
 वृमा सना यया मृजा ॥ नै ॥ सिहा सना यया मृजा ॥ ॐ वृम ॥ ॐ नमः ॥ सिहः
 लिगं देवः कीन क क न्य सति रुं ॥ न क व कं गिन गति न गृध्र ॥ ॐ नमः ॥ महं
 न ॥ गि गूला कष नंद वं वना कल धा विर्णा ॥ वा मा नु स डे ता द वीः दिशु
 आ कल धा वना ॥ रु मा रु न न ॥ ॐ नमः ॥ ध्या न य र्थ नमः ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥
 गी ध्व नं द वं सवा या य य न न ॥ ॐ नमः ॥ ध्या न य र्थ नमः ॥ ॐ नमः ॥ नमः ॥

क॥ उं मार्क (धु) या विषद हु य रु तानू य हा या व ता न च क म स्य यः
चु न कि न (धु) व क विदु क क ल्य ॥ धि या कू द य मू दि त स्र व क र ग
कू य रा व सा यं द या रु व रु रु व तां (धु) ज स च धि का या ॥ ॥ नि म
क न भ म्मा वा सा ॥ नि ग मू ल रु व अ क्ता म रु ट ॥ न का यु का न ॥ ॥ च
त्र य ति स ॥ नि ग न कू स र्व वि धु क र स्य ॥ स र्व रु द श्या व लिं ग द्र श्वा
हा ॥ मि भ ला यि व न वा य ॥ म र रु ता उ च्चा न त्वा य स गु ल न द्वा य ॥ ॥
गि र ल्य न धी स र्व हा ॥ ॥ त त ॥ स र्व स्ना न आ य ॥ स्ना न क ल ण न

क म क न र्म ॥ डी म धी ध्व (धु) वा आ दि न ॥ नू द च धु ज या व क्ता ज धी ॥
य अ म राः स्ना न क ल ण स्ना नः मू ल म नु ण अ लि मा म स्ना न ॥ स्र स्र
म नु ण च न्द न सि न्द न दृ ष्टि उ क्ता य वी राः स्र स्र म स्ना न उ मि थ व २ स
रु रु स्ना न ॥ रु ल अ द्वा न क ल्प य ता का य अ य ता क ॥ रु ल म गु ल
धू य दी य व लि स रु आ व गि य ति स्र ॥ आ सिं धी च्चा द क्ता ॥ पू र्व कि
ता रु म व ति ति ॥ नू द च धु च न वि (धु) र त्वा च्चा म वि यु ल्प म म् ॥ ॥
न र्व य व धु य रु ति स्र ॥ स र्व ॥ स र्व रु य द या व ला सा ल अ न स्र स्र

असमत ॥ अष्टमद्वयं अष्टमं वा यावत् ॥ ॥ धनधनिलिखाय ॥
न्यासयाय ॥ कामः कथं नः कथं नः ॥ धीखधु कं कं मः वीप्रदयः सिद्धल
वकचन्दनतयावलेयनया ॥ धृयकं ॥ स्ववधुलिखितिनयायः शिवा
नः मद्राव अष्टदलः स्वतः चरुप्रसः अष्टद्वयं वरुदाले कालाः शिवा
नसः ॥ अष्टमद्वयं नदचधुदिमत् ॥ धनधनं ॥ गुह्यतामसिद्धल
धनं ॥ दानमथवश्चिह्नं ॥ यद्वत् सतथा यावः महाकालवलिः
कुरु यागिनी चामधुवलिः कुरुः कलहः कुरुकनः सिद्धमूढ

यत्रिवात्रमालकाय यावत्ततयः कुरुमः चरुसमनया धृयकं
रुम्बनवीडया यावत्ततयः अष्टमिप्रथमं ॥ धनिलिखितमथवश्चाम
तं ॥ न्यानजगतिप्रथमं ॥ उवद्वालुखधुमं रुराति ॥ धनं ॥ धनं ॥ धनं ॥
तं ॥ चन्दनसिद्धलः ऊऊमः दृष्टिः स्वातकधुमताकार्यं चयताकाजः
इवान्वाला कयतिमा धनिलिखादिनथवश्चामसेयतयः ॥ धनं धृ
नदाव ॥ यऊमानस्यं स्वयाद्ययाचकविधिः ॥ यऊमानस्यं यथा
धनं कुरुलयाकि कामनार्थं महाष्टमीयावधुखधुस्वयनड

विष्णु मायुः ॥ नैऋती अर्धमाग मायुः ॥ साहय आदिः ॥ आवाहनादि च
 ननात् नयस्यथा ॥ निमदा ॥ ॐ नि अर्धमाग मायुः ॥ ॥ रुद्र छुदि ॥
 नैऋती अर्धमाग मायुः ॥ ॐ नि रुद्र छुदि ॥ आत्मायुः ॥ नैऋ
 मा ॥ आत्मायुः ॥ चन्द्रनात्मादि गय ॥ नैऋती अर्धमाग मायुः ॥
 विन्दु विन्दु ॥ ॥ धनधीलवायु ॥ अरुमान न प्रियं ॥ अर्धमाग
 लाहयादि ॥ अर्धमाग ॥ ॐ स्विना रुद्रमाहादवीदवानां मनसाधि
 य ॥ आवद हामियर्थं तावत् स्विनामाचन ॥ आवद्वन्द्यार्कमायुः ॥

महीयान्तिजलायदं ॥ तावत् छुदिन कालं च न स्थायस्विना रुद्र ॥ दुर्गस्य
 यत्र महीयान्ति दुर्गं नृपि रुद्रं कत्री ॥ जगत्सागात्रिधं भयं अचन स्विना
 रुद्र ॥ सर्वलक्ष्मीयवृद्धार्थं सर्वं ह्येकं कत्री ॥ अष्टमादि दहम्यर्कं
 (नैऋती स्विना रुद्र ॥ अरुमान स्य अथ भयं कर्तुं लयाधिकामनां
 यत्र स्थायस्विना रुद्र ॥ ॥ भाहनी रुद्र ॥ दन्ति स नगा रुद्र च्यादं
 सत्रयिभला सच कर्तुं वायु अर्धमाग मायुः ॥ कायावत् कालचायमूलमन
 नरुयधन ॥ ॥ दचयिय कावेद नृति सगमन ॥ नैऋती अर्धमाग मायुः ॥

तामहा ३

हायादुकां॥ नै० ॐ त्रं मां हं सै ४ मृत्पु रुनधी यत्रा यत्र वक्रा यत्रा दुः
कां॥ ॐ गि वक्रा न्या स॥ ॥ नै० ॐ जी वा ऊ य द रु द या य मा इ की ४॥
नै० ॐ हि न स स्वा हा॥ नै० ॐ इ य च धु त्रि य म द नी ति स्वा ये वी म ठ॥
नै० ॐ हूं हूं सदा न क २ क व त्रा य दूं॥ नै० ॐ त्रं मां हं स ४ न य नु या
य व म ठ॥ नै० ॐ मृत्पु रु न मृत्पु रु रु ॥ ॐ य म न्या स ४॥ ज ला य
या य यू ज॥ यू व व ०॥ त न ध का द्वा त्रै॥ नै० ॐ न सै हूं म य हूं

व स द ल क म लं ना ग य ना य य र त वा ऊ व द धृ (इ) य म दि सि
स ग रं वा न चा रु म् य कं॥ वा ऊ का ला य वि रं स ग ल ग ल य र्ग म
ध रू (अ) य च धृ का ता द वी य सी द स क ल रु य रु न म धु ल नं
न मा मि॥ ॥ त न ४ यू ज नं॥ नै० ॐ आ धा वा दि ०॥ नै० ॐ य द्वा स ना य
या यू ज॥ नै० ॐ सिं हा स ना य मा यू ज॥ नै० ॐ म हि मा स ना य मा यू ज॥
नै० ॐ रुं रा स ना य मा यू ज॥ नै० ॐ ति रुं रा स ना य मा यू ज॥ ध्वा नं॥

वैजयं च वलुमहादवीः श्वायं द्रुगवती विवाः गकत्रामिकत्रा
 रासा विद्युत्काटिसमयरा। यीनवल्कललाशमविनशात्रानुः
 हासिनी। किंवीटीकुललाकात्रीकसूत्रामहिनीयूना। वल्लमाला
 विचित्रं ललाउमालावलविभ। अष्टादशगुडाकाकादिश्रवमु
 न्द्रमिता॥ खड्गवाहं तथा चक्रं वजाकुण्डवनाधरं। उमवृष्ट
 लयागश्चः दक्षि। एतविनाजिग। रुटकेधनूरुसुश्चगदोघ

२५५ यं गवती यती ॥ सिंहासुतसमानुदा महिषायादगर्हि ता। महिषासुतनिहं कोसत्रदेयविनाजिग॥

(५) ॥ अस्मोरिती। यावगर्जनीरुसुश्च खद्वाम्दकेषावाहकं। विन्दुम
 दारथासिद्धिं सिंहासनायविस्मिता। पुर्वं आत्मा महादवीमहा (२)
 रुगवतीनमाः सुगो। एषा४भाउषरुसुश्चः खद्वाम्दममवृकं वि
 ना। नूदचलुयचलुचचलुयमचलुनयिका। चलुचलुवशी
 चवचलुवृयातिचलुका। नवमीचायचलुचमधुक्कामियरा
 चिता। आचनाशानूष्मककुनीलाशुक्काचधूमका। यीशाचयाह

लाङ्गयात्रात्रीरुक्माहविस्मिता। मदिआधयूनानंरुगतस्मिन्नत्र
 चाकिराक। स्माथावृहन्नदंननत्रायचक्षुदिहिकमा०। नव
 आत्मासहोदवीमहारुगतगीनभासुता॥ आनयूर्यनम॥ आष्ट
 ॥ आवाहननादिआनिमज्जं दक्षिण०॥ नै० ॥ ५० ॥ उग्रचक्षुअया
 ईनम॥ नवयाशं आचानं अर्घस्तानं अलि स्तानं चन्दनं सि
 द्धुन आकगमाहनीयूर्यमाष्ट॥ तत॥ ४५०॥ नै० ॥ ५० ॥ दू० म

हाकालाययाष्ट॥ दद्यादकि०॥ म० (ध०) ५३ लि ३॥ नै० ॥ ५० ॥
 नाजयद० ५० ॥ उग्रचक्षुनिममर्द्धनी दू० ५० ॥ सदात्रक २० ॥ मांशः
 स० ४ मृत् ५० ॥ रुद्रमम० ४ स्वाहा॥ नै० ॥ नम० ४ ॥ ५० ॥ ५० ॥
 ४ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥
 हाविशानाऊ० ४ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥
 दद्यावाभमृ० ४ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥

उग्रचक्षुनिममर्द्धनी

आनन्दहाकि ३

आदि ॥ नैऋत्यादि ॥ नैऋतिहासनाय यायूः ॥ नैऋतिहासना
ययायूः ॥ ध्यानं ॥ नैऋत्यवधुवद्वहवचकं मकुण्ड ॥ रथेवचाव
नदं धूलयायूः ॥ दक्षिणवित्राजिग ॥ रुट कंचराथायधधन
गजचयावकं ॥ गऊनीयेयक ॥ विन्दुमूदायवामक ॥ सिंह
महिषमानूरावाचनायूः ॥ धारिता ॥ ध्यायराचमहादवीनूदः
चधुनभाः सुग ॥ ध्यानमूयं नमः ॥ आवाहनादि ॥ चन्दनादि

शुक्लि ॥ नैऋत्यैऋत्यायूः नमः ॥ यायूः ॥ नैऋत्यैऋत्यायूः
नूदचधुयवीनभायाइकां ॥ नैऋत्यमः ॥ ध्यायराचमहादवीनूदः
यायूः ॥ नूदचधुयवीनभायाइकां ॥ नैऋत्यमः ॥ ध्यायराचमहादवीनूदः
आवाहनादि ॥ सिंहः महिषः ॥ ध्यानं ॥ नैऋत्यवधुवद्वहवचकं व
रुचववद्वहवचकं ॥ ध्यायराचमहादवीनूदः ॥ रुट कंचराथायधधन
गजचयावकं ॥ गऊनीयेयक ॥ विन्दुमूदायवामक ॥ सिंह

[illegible]

(ह) मृ च वि गी । रु ट कं हु मा ण ध नू र्ग दा घ ष्म च त र्जु नी । दे त्य क ण
 वि नू मू दा वा म रु ष्म च धा त्रि णी । सिं रु म हि म मा नू रः रु ष्म व ष्म नि रु
 मि ता । न वं नू मा म हा द वी च ष्म य च न मा नू रः ॥ धा नू मू र्ग या वृ ण
 ॥ आ वा रु ता दि ॥ शु ष्म लि ३ ॥ नै ण डं डं धी च ष्म य यै न म ४ वा यृ ण ॥
 नै ण चो चो चू चो चो च चो धी च ष्म य यै न मा मा दू को ॥ नै ण न म ४
 धी ष्म नि ॥ व लिं ॥ नै ण कि मू दा ॥ वि नू ३ ॥ ०० नि ॥ ॥ च ष्म ना यि

का॥ वै आधा नादि ॥ सिंह मदि ॥ ध्यान ॥ वै ॥ खड्ग चक्र कालांशु
धनचक्रं च वज्रं ॥ अंकुशं च विधूलं च ॥ बाणं दक्षिण विजृम्भी ॥ शूट
कं तर्जनी धनुर्गदा च ध्वज आधकं ॥ देखकं विन्दु मूला वा मरुत
मू॥ (धर्मशिरा) ॥ सिंह सनसि ताद्री महा महि गमिनी ॥ धूमवधुमि
ताद्री नमस्तु च धुनायिका ॥ ध्यान मूर्ध्नि वायु ॥ आवाहनादि ॥ शु
भ्रलि ॥ वै ॥ मूर्ध्नि धुनायिका ये वायु ॥ वै ॥ वाँ वाँ वूँ वूँ वाँ

वाँ धुनायिका दवीन मायायु ॥ नमः धी क्रीति ॥ नववलि ॥
विन्दु ॥ धर्म मूला ॥ शूति ॥ ॥ च धु ॥ वै ॥ आधा नादि ॥ सिंह म
दि ॥ ध्यान ॥ वै ॥ ध्वज वधुमि नगाव शिवनाच स्रवृषिणा ॥ अग्नि
बाणं धनचक्रं वज्रं वज्रि लंघकं ॥ बाणं दक्षिण रुतु मूला कालां
काल (धर्मशिरा) ॥ शूट कं वा कूर्णं या धर्मगदा च ध्वज कूर्णं दिव्य कर्ण वि
न्दु मूला वा मरुत मू विजृम्भी ॥ नववृत्तां महादवी च धु ये च नमा सु

न॥ ध्यानयर्थं यायूज॥ आवाहनादि॥ शुक्ललि॥ नैऋतं धीचक्षुः
 ये यायूज॥ नैऋतं चैत्रं चैत्रं चैत्रं श्रीचक्षुः ये दत्री नभा यायूज॥ नमः
 धीक्षीति॥ नववर्ति॥ कालम् बुद्धा॥ हति॥ ॥ चक्षुवर्गी॥ नैऋतं
 धात्रादि॥ सिंहमहिष॥ ध्यानं॥ नैऋतं धूमवर्धुमहादेवीः सिंहम
 हिममिनी॥ स्वप्नध्वजधनवर्कं वरुवन्दमवचगिधूलं यायूज
 रुचदकि॥ ध्यानयत्नं रुचकं यायूजधुवगदायधुमसतर्जनी

४२

देखकं विन्दुमदा वाममुजच॥ धारिता॥ सर्वत्रतामरुवा श्रीच
 क्षुवर्गी नभा मुता॥ ध्यानयर्थं यायूज॥ आवाहनादि॥ शुक्ललि॥ नैऋतं
 नैऋतं धीचक्षुवर्गी यायूज॥ नैऋतं चैत्रं चैत्रं श्रीचक्षुवर्गी दत्री नभा या
 इका॥ नमः धीक्षीति॥ नववर्ति॥ बुद्धयमदा॥ विन्दु३॥ हति॥ ॥
 चक्षुवर्गी॥ नैऋतं धात्रादि॥ सिंहमहिष॥ ध्यानं॥ नैऋतं सिंहमहिष
 मानुषः चक्षुयीगा नृपयगा॥ स्वप्नध्वजधनवर्कं मकुषं वन्दानिच

विष्णुलंकाशयदत्तम् वदन्तनाम्न रुषिणा ॥ विष्णुनागप्रवृत्तद्वीध्याय
धीचक्षुःप्रमिनी ॥ आनयूष्ययायुः ॥ आवाहनादि ॥ गुणैर्लिङ्ग ॥ नैऋतं
उत्तं धीचक्षुःप्रवायेयायुः ॥ नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायद्वीध्याय नमः ॥
कां ॥ नैऋतं नमः ॥ धीचक्षुः ॥ नववर्ति ॥ शुक्राशमदा ॥ विन्दु ॥
चक्षुःका ॥ नैऋतं आवाहनादि ॥ सिद्धमहि ॥ आनयूष्ययायुः ॥ नैऋतं वदन्त
प्रवाय रुषिमहि अग्निसिनी ॥ कनाभा ॥ अग्निसंयुक्तानां वदन्तविल

मिता ॥ स्वर्गविष्णुलंकाशयदत्तम् ॥ चक्रादिनिर्मकं ॥ वदन्तं यावदायुः
दक्षिणविनाजिता ॥ रुद्रकंदेयकं ॥ अथ नैऋतं ॥ आवाहनादि ॥ गुणैर्लिङ्ग ॥
नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायेयायुः ॥ नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायद्वीध्याय नमः ॥
वक्षुःप्रमिनी ॥ आनयूष्ययायुः ॥ आवाहनादि ॥ गुणैर्लिङ्ग ॥ नैऋतं
नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायेयायुः ॥ नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायद्वीध्याय नमः ॥
काद्वीध्याय नमः ॥ आवाहनादि ॥ गुणैर्लिङ्ग ॥ नैऋतं ॥ धीचक्षुःप्रवायेयायुः ॥

सर्वलोकालक्षणं श्रीमन्नान्नयथाधरा। दालाकलितमधुसू
काधिकालितविग्रहा। दालागामुजादवी। वामदकाविधीनिधी।
। खड्गवाधनथाहाकि। विष्टुलश्रुदकि। (६)। रुतन्वन्वदुर्गंयाह
कृष्णं वामकंकन। सिंहसनसमावृष्टमहिमायादजं वही। धू
लककचद्यातानिकाधिश्रुविद्यानती। ध्यायमानासदादवी स
र्वमकुर्वन्कवीजयायादवतावृत्तीकायाअधीनमाः सुते॥ ध्या

नयूष्यं नमयायूज॥ आवाहनस्वायनसन्निधानसन्निवाधनं अ
वगुष्ठनं दिग्बधनं॥ नैऋतं कुंजीसः कायाअन्येयाद्यं नमः॥ चर्व
याद्यं आया न चहुनादिकं॥ शुद्धलिं ३॥ नैऋतं कुंजीसः काया
अन्येयायूज॥ नैऋतं चर्वलिं॥ आमेतिदा॥ विन्दु
॥ सताजयादिपूजा॥ नैऋतं यमासनाययायूज॥ नैऋतं यमासनाय
यायूज॥ नैऋतं हंमैलैवैवैयूजयाययायूज॥ नैऋतं हंमैलैवैवैयू

न॥ कंकुमानववर्धुशशि नगाचावृकासिनी सच्चलिकालरुखा
मीयतस्त्वविजयाधिव। खड्गदलं यागदलं मधुचक्रधनोद्यु
ताः समक्षकविनायकय अणुगच्छमहं ध्वनी ॥ ध्यानयुगयायुज ॥
गुञ्जलि ३ ॥ नैगमो विजयादवीनमायायुज ॥ वलि ॥ विन्दु ३ ॥
अजिता ॥ यद्मः युयुता ॥ अजिताय ॥ ध्यान ॥ हिमकन्दतिर्गद
वीखड्गदलकधनवी ॥ अकमालाचखदामनागययस्यारक

अजितादवीमहामाया दुर्गादवीनमा स्तुत ॥ ध्यानयुगयायुज ॥
गुञ्जलि ३ ॥ नैगमो अजितादवीनमायायुज ॥ वलि ॥ विन्दु ३ ॥
ययनाजिता ॥ युयुताय ॥ नैगमययनाजिताय यादका ॥ ध्या
न ॥ नैगमगणीययसंकासं खड्गदलकधनवी खदाममधुचक्र
विन्दुयागसमाहितं ॥ अयनाजिता महादवीनमा मीयतसंक्रि
ता ॥ ध्यानयुगयायुज ॥ गुञ्जलि ३ ॥ नैगमो अयनाजितादवीनमा

यायु॥ वलि॥ विन्दु३॥ ॥ रुक्मी॥ यद्वा यथा स॥ वि॥ रुक्मी या
इका॥ आन॥ नीलात्यव निरादवी रुक्मी लुका वली स्वइरु
टक खदा म गज रुका स सा रिता॥ वन दा रु य रु सा च न मा मि दे
य घा र नी॥ आन य य या यु॥ गु अलि ३॥ वि॥ रुक्मी द वी न म
यायु॥ वलि॥ विन्दु३॥ ॥ रुक्मी॥ यद्वा यथा स॥ वि॥ रुक्मी या
इका॥ आन॥ रफ का अ न व लु रिताः स्व इरु ट क आ वलीः स्व दाम

म लु रु का च व न दा या य धा विधी॥ सर्वोत्त काल रु वा श्री रुक्मी द
वी न मा इ रु ग॥ आन य य या यु॥ गु अलि ३॥ वि॥ रुक्मी द वी
न मा या यु॥ वलि॥ विन्दु३॥ ॥ मा रु नी॥ यद्वा यथा स॥ मा रु
नी या इका॥ आन॥ नीला अ न निरादवी स्व इरु ट क आ वली॥ जा
य मा ला स ख दाम ना ग य य स या रु क॥ य रु का च वि न रा च न मा
मि मा रु नी मि वा॥ आन य य या यु॥ गु अलि ३॥ वि॥ रुक्मी द वी न म

(वे) वहाला का अचक धूल अद किने । रुट कं या वना धी व ग रू नी द य
 धं ध जा उ म ल ला मु ल का धं धा व य दाम क रु ड । मि हा स न ग ता द वी
 य त्या नी र स्ति ग ध्वनी ॥ म हा म हि म मा नू टा द द्या ४ या द न यं गि धी । धू
 ल न म हि सा घा ट व क म (अ) ग (थे) व च । को ध नू या व ता नी च का ला नू या
 स्ति ग ध्वनी । व द्वा ध्मा मा रु व न्द च धू ज नी या ल ह ध्वनी । अ य मा ना म
 दा दूर न न मा मि स व द व ता ॥ ध्मा न य म्मा य धू ज । आ वा रु ना दि मू दा द
 र्ग अ ७ । नि ज हं २ धी रु व न ध्वनी या र्ज न म ४ । व रं आ चार नं स्ना नं मु ति

उं सं २२

स्ना ना दि ॥ च न्द ना दि ॥ अ अ लि ३ । नि ज हं २ धी रु ग व ती धी च वि का ला य
 नी रु भ ध्वनी द वी न मा या दू का ॥ व रं ध्वनी व लि गू द २ सा रु ॥ ॥ रा ता व
 द्वा ध्मा दि ॥ धू ज । नि ज हं सा स ना दि ॥ अ आ र्ज ॥ नि ज हं व द्वा य नी या धू
 ज ॥ ॥ रू या दि न यू उ य ७ ॥ व रं स र व द्वा ध्मा दि मा रु ग (धे) था व लि गू द २
 सा रु ॥ ॥ रू ति रुं ध्वनी ॥ ॥ रा ता व द्वा ध्मा दि वि द्वा य धू ज ॥ वि धि ॥ नि
 ज हं सा स्ना य या धू ज ॥ ध्मा नं ॥ नि ज हं मू य ना य वि धि अ ला इ ति नि रा ग
 (मै) य हा ना व ती १ धू रु स्ति व १ धू रु क ला स नू चि ता चा रु मू खा रा

स्विनी। चारुर्वाक्यवनाकसुखकनधाक (६) धृगायसुका स्वगाभात्रुह
हंसगमिनिमूधाः ध्याताविनिश्चियिआ ॥ ध्यानयस्ययायुजा नैगमः
ध्यानजुभायवप्रदविमलसुखकाय (७) यादुका ॥ नर्ववलि ॥ यम ॥
मारुध्वनी ॥ वृषामं ॥ ध्यानं ॥ नैगकका लाउठवदनादित्रविताय (८)
दुमीलीविराः क्रीष्णराधवला रुमात्रश्रुतिनिरा श्रीनरुनीसुन्दरी
शैशुलावचचा मूधानिनयनारैदक्षिमसुगायुधाः हयादीयत्रमः
ध्वनीवृषणा गुरुमा मतिहा हित्वा ॥ ध्यानयस्ययायुजा नैगमः ॥ अथा

(५)
प्रमूमाधति ॥ नर्ववलि ॥ शिष्टल ॥ विन्दु ३ ॥ ॥ कोमात्री ॥ मयूनामंन ॥
ध्यानं ॥ नैगचक्रकायककुलाधुतिनिरा यावालहालावली ॥ उल्लू
उवयप्रनागनूधराः वात्राकृतीभादीनि ॥ मद्रकायुविका ॥ मद्रन
यगात्रकायला रुमहीः ॥ किष्टुलधृगा सुककिगमही याशे मदाध्या
यनी ॥ ध्यानयस्ययायुजा ॥ नैगमध्यात्र प्रमूमाधति ३ ॥ नर्ववलि ॥ ॥ कि
॥ विन्दु ३ ॥ ॥ वैष्णवी ॥ गनू ॥ ध्यानं ॥ नैगरका रुमहृदामसीकित्र
चिता मिष्टुवनालाचनी स्यामाद्या सनयविकादलनिरा चारुकुजाभा

दिता ४॥ वका कुवल वंख वाम क प्रश्नः को भागु की वा य वा १॥ धी मान यातः
नित्राल वा नूय विष्णः गा का मनी ध्या यनी ॥ ध्यान यूर्य २॥ वै ५॥ अथो नम
भा धति ३॥ एव वलि ॥ वंख ॥ विन्दू ३॥ ॥ वात्रादि ॥ महि अ ॥ ध्यान ॥ वै
तीरु दं कु यि न क व रु कूठी धा नान ना धा य धी या रा गी ध्या य ऊ ल या व
क नि रा गु धु रा नू यी वला ॥ वाम मृ ग ल या ध मी न क प्रश्न न ला ऊ दा म
लिताः मा ही मा य त्रि मं किताः वि न य धी वा ना ही का ध्या यनी ॥ ध्यान यूर्य
२॥ वै ५॥ अथो नम भा धति ३॥ एव वलि ॥ काल ॥ विन्दू ॥ ॥ ५॥ य धी ॥ ग

जा मं ॥ ध्यान ॥ य धी रु य ४ य त्रि कि ता मनी मयीः नित्रदि व धु वलि याः
कात्रा कि सरु सरु म व य रा धी मान विधा जा यि या ॥ वा रु व दि धृ ता क
क र न व नि धि रा म्ब ला रु म वी रु मो हा व म धी वि चि रु रु व धीः ध्या ता
म नू ली धि नी ॥ ध्यान यूर्य जा म् ५॥ वै ५॥ अथो नम भा धति ३॥ एव वलि
॥ ५॥ विन्दू ३॥ ॥ वा मू धा ॥ य गा मं ॥ ध्यान ॥ य य रा कि क व न्धः
हा न न चि ताः नि ष व रु धा द लीः ली ला लाल य का धी ती रु व द नाः
मि रु न मि रु सु यी ॥ ग ॥ धु ल मि रा क रु क व धु नू ला धा दू ल व मा

मनीः यगस्कत्वनिवाहिनी रुकूठिना मूलावली नमिषी ॥ ध्यानयुग्मं
यायुज ॥ नैऋतमूधा न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ काश ॥ विन्दु ३ ॥
महालक्ष्मी ॥ सिंहार्म ॥ ध्यान ॥ नैऋतमूधा न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ काश ॥ विन्दु ३ ॥
मनीकहस्ताः वाहाचा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
४ यथा ॥ यथा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
मसा यथा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
या न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ खड्गमूधा ॥ विन्दु ३ ॥ ॥ इति वक्ता

आदि विद्यत्रविधि ॥ इति नृमन्त्र ॥ ॥ गग ४ मन्त्रावयुज ॥
नैऋतमूधा न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ काश ॥ विन्दु ३ ॥
महालक्ष्मी ॥ सिंहार्म ॥ ध्यान ॥ नैऋतमूधा न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ काश ॥ विन्दु ३ ॥
मनीकहस्ताः वाहाचा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
४ यथा ॥ यथा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
मसा यथा नृविनाजिनी नमिषी वाचमा नृवाचा यथा ॥
या न अभायति ॥ चर्ववर्लि ॥ खड्गमूधा ॥ विन्दु ३ ॥ ॥ इति वक्ता

नैऋत्योऽथामिनीत्यां या यृज ॥ चर्ववर्ति ॥ ॐ तिचरु ४ का ६ यृज ॥ ॥
तमाद्याल यृज ॥ नैऋत्यां लीलं नृमां ॐ द्याय वद ह साय सत्राधियत अ
यादूकां ॥ नैऋत्यां त्रीनूं नृमां अ ॐ (नैऋत्यां किं ह साय सत्राधियत अ या
दूकां ॥ नैऋत्यां सीसूं नृमां अ माय दधु ह साय य ताधियत अ यादू
कां ॥ नैऋत्यां कौकूं नृमां अ नृमां अ य ख म ह साय वा रु साधियत अ या
दूकां ॥ नैऋत्यां वांवी नृमां अ वूं नृमां अ वूं नृमां अ वा ण ह साय ऊ लाधियत अ या
दूकां ॥ नैऋत्यां योयीयूं नृमां अ मं नैऋत्यां यूं वा य य ध उ ह साय य व नाधि

यत अ यादूकां ॥ ५ सां सीसूं नृमां अ वूं नृमां अ वा रु साय ध नाधियत अ यादू
कां ॥ ५ कौ कौ कूं नृमां अ ण ह साय अ य व रु ताधियत अ
यादूकां ॥ नैऋत्यां ॐ कूं कूं कूं अ अ ध म च क ह साय या ता नाधियत अ या
दूकां ॥ ५ उं उं उं अ य क म ठु ल ह साय स म्नाधियत अ यादूकां ॥ चर्व
वर्ति सर्व ॥ ॐ तिद्याल यृज ॥ ॥ नैऋत्यां २ काला ये न म ४ ॥ नैऋत्यां २ सें २
छा ५ य च ण ह साय न का ये वर्ति गृह २ स्वा हा ॥ ॐ तिध धिलि यृज ४ ॥
तमा ४ तिधिलि यृज ४ ॥ नैऋत्यां ५ कौ कौ कूं अ य न म ४ ॥ नैऋत्यां ५ कौ कौ कूं अ य न म ४ ॥

[illegible]

दक्षवाक्यधृगाः सन्नावा सन्नानां वधार्थं ॥ १ ॥ अथ यथा वा साय कलि
 काम (धर्म) स्मिन् । न वध्वा त्वामहादवी सिद्धि लक्ष्मी न मा माहं ॥ २ ॥ अथ यथा
 नमः ॥ आवाहनादि चन्द्रता कुरु यथा ॥ ३ ॥ अथ ॥ उं कीं कूं कौं कौं कौं
 नमः ॥ ४ ॥ अथ सिद्धि लक्ष्मी दधी या यूज ॥ ५ ॥ न वं वलिं ॥ ६ ॥ उं कीं कौं कौं कौं
 सिद्धि लक्ष्मी दधी या यूज ॥ ७ ॥ उं कीं कौं न मा रुग वती सिद्धि लक्ष्मी ध्वनी रुट् स्वा
 हा ॥ ८ ॥ सिद्धि लक्ष्मी नमः ॥ ९ ॥ उं कीं कूं कौं कौं कौं नमः ॥ १० ॥ न वं वलिं नृ
 द्र २ स्वाहा ॥ ११ ॥ अथ सिद्धि लक्ष्मी यूज ॥ १२ ॥ ॥ न मा य नि मा यूज ॥ १३ ॥ अथ सिद्धि

महादेववायमहालक्ष्मीनक्तिसहितायसंयुक्तलस ३ ॥ ५३ वपुःसूत्रविद्या

1/ दृष्टा =

समनसं च सिद्धिं लक्ष्म्यं । महालक्ष्मीं यत्तद्ध्यायेत्तु मृगाय प्रशस्तं ।
 ध्यानं यत्तु नमः ॥ आवाहनं नादि ॥ ॐ अहं हं सः मृत्पुंज या अ अ मृती
 स्वनं र ह न का य या य अ ॥ ॐ अ ह्या आ न नु ग कि से त्र वा न न्द वी ना
 धि य त अ मृ सं य लु क ल गं अ नमः ॥ ॐ न व ली ॥ ध नू आ नि मृ
 ॥ ॐ न न ॥ न न्द व ली दि ॥ ॐ अ आ दि ॥ व ज्ञा प्या दि ॥ ह द
 आ दि ॥ ॐ ॥ ॐ अ गं ग म दि ॥ ॐ अ व क र ल त्या दि ॥ अ क त र ग म दि ॥ अ मृ
 प या दि ॥ ॐ ॥ ॐ अ आ दि त्या दि ॥ ॐ ॥ ॐ अ मृ ग्या दि ॥ ॐ ॥

अथानमस्तु मनु॥ वं हं कृते कृत महासुनर्माह न संकलताथमनु यवगासकततत्वाधियतय बुद्धविष्णु नृजालेन

[illegible]

和

आज्ञा तं वीरिद्विर्घातिव न ता य मायूक ॥ ५

कृष्णवर्णकयालखद्यम्बकैवृथा॥नीलात्यनारुणैर्विष्णुवासरुमन्त्रि
 ऋषिषी॥दिद्यन्तकृताद्यद्यमाकृन्तकृषिगा॥(व्यतमद्यासनाय
 वीवर्द्धयद्यासनस्मिता॥नर्वंश्वात्मासहायवीवावृणीदिद्यन्त्रिषी॥
 श्वानयूष्यंतम॥आवाहनादिचन्दनाकरयूष्य॥गुञ्जलि३॥अथा
 नाशु६॥उद्यचक्षुमूलविद्या॥नर्ववलि॥वांरुदयादि६॥नृदच
 ७॥दि॥अथादि८॥वक्त्रादि॥नृ१६॥२६॥२६॥२६॥२६॥वावृणीम
 रुअकूलकुरुद्वानकायेयायू॥नर्ववलि॥वृत्तिकुरुद्वान॥४॥

नभावलियूजा॥ प्रियं वसन्त॥ ॥ नभासाहाकालवलियूजाद
वीनऊवनाम॥ नैमं रुद्रयादिन्यामशाजआधनादि॥ नैमं महा
यनासनाययायूजा॥ ध्यानं॥ नैमं महायनासमानुषा रुद्रवर्षुसंभार
नं॥ नकास्यं गिलावनंरीमं वचला द्दधिनावृद्धं॥ यिम्भानंरुद्रियिम्भक
नं॥ महाकायमहादधी॥ बाधुचर्मयविधानं॥ सिंहचर्मसिगुहिरा
वत्तसयास्कुलकात्रे॥ त्रियुनादि विरुद्रिगं॥ खड्गदण्डकदलकुरु
दाक्षयागविन्दुका॥ विष्णुकाटिमहानऊ॥ कवन्धला॥ नाशिरा॥

वसुविष्णुसूत्रादिः विदिताष्टकादकां। ध्यानकुम्भकादकां गृ
ह्यत्रिकनवाकलां। रुतः ४ यं रायि ध्यानानां किलिकि लाला वधकलं। धमध
नका मलादवः लाका नां हिरकालिनीं। नमामि श्रीमला कालं रं नवैशुव
नध्वनं॥ ध्यानसूत्रं नमः॥ आवाहनादि मन्त्रा॥ नैऋतं मला कालाय मन्त्राः
रं नवाय ॐ रं मया यथा धृयदीययुजावर्तिं गृह्ण २ स्वाहा॥ उजैः ४ उजैः
नैऋतं मला कालं नदयदं रुतं कन धमधनयी धियनि ४ क
मंलानका नक ४ रुतं नखान संधानाना नूयधनय ४ यि धमच रुत

धत्तालथुतत्राहृष्टदिगम्बलमहाकायलीमाञ्जनसमंयकः १ मण्ड
 मालाधनालीमकाशखट्वाङ्गधनकः २ नकनगमहाभोदासूत्रासांसवसा
 धियगृह्ण ३ वलिसर्वान्मूलिहृन्नुवसंयुतागन्धधृयादिसहितामया
 रक्षा निजिंथोतायत्रिवानसहिताताथक्रमस्ववत्रधामममदू ३ वलिगृ
 ह्ण २ स्वाहा ॥ यत्रिवानरुद्रकादिनक्षत्रक ॥ १६ ॥ भूवर्गसूच्ययीष
 धिकानरुद्रकमहाशेनवायमहाभ्रमनाधियतयस्वर्गकिमहिताय
 स्वयत्रिवानाय ॥ १७ ॥ माञ्जुष्यधृयादीयमूलिवलिसिंहितगर्भ २ ममभक्त

नाथय २ सत्राथसिद्धिंदद स्वभक्तं ३ वलिं ४ कं २ स्वा ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

३०३

ASHA ARCHIVES

[illegible]

महाधम्मनाधियगतथस्वहाकिमहितायस्वयन्निवा... दंमया
युष्मधूयदीयअलिवलिगृह्ण २ ममहाकुनाहाय २ सत्ताथसिद्धिद
दस्वमदूहृदवलिगृह्ण २ स्वाहा ॥ १ ॥ नैऋतं कं कवर्गजाग्रथयी
भधिकात्रयि युनाककमहा २ नवा महाधम्मनाधियगतथस्वहाकि
महितायस्वयन्निवा नाय अस्मदादीनां सर्वधम्मिकि कुरु २ स्वाहा ॥
२ ॥ नैऋतं कं कवर्गजाग्रथयी भधिकात्रयि युनाककमहा २ नवाय
महाधम्मनाधियगतथस्वहाकिमहितायस्वयन्निवा नाय अस्मदा

दीनां सर्वभूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ३ ॥ नैऋतं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भद्रिका
प्रअग्निः कीदृमहा महाशैत्रवा यमहा भूभना धियतयं स्वर्गकि
महिता यस्वयत्रिवात्रा य अस्मदा दीनां सर्वभूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ४
॥ नैऋतं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भद्रिका प्रकाता रुमहाशैत्रवा यमहा
हो भना धियतयं स्वर्गकि महिता यस्वयत्रिवात्रा य अस्मदा दीनां
सर्वभूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ५ ॥ नैऋतं यं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भद्रिका प्र
कायाली भमहाशैत्रवा यमहा भूभना धियतयं स्वर्गकि महि

ता यस्वयत्रिवात्रा य अस्मदा दीनां सर्वभूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ६ ॥ नैऋतं
यं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भद्रिका प्रकाया दमहाशैत्रवा यमहा भूभना
धियतयं स्वर्गकि महिता यस्वयत्रिवात्रा य अस्मदा दीनां सर्व
भूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ७ ॥ नैऋतं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भद्रिका प्रलीमय
यमहाशैत्रवा यमहा भूभना धियतयं स्वर्गकि महिता यस्वयत्रि
वात्रा य अस्मदा दीनां सर्वभूतिकुं नू २ स्वाहा ॥ ८ ॥ नैऋतं ऋतं वृश्चिः सूर्यो भ
द्रिका प्रकाटक महाशैत्रवा यमहा भूभना धियतयं स्वर्गकि महि

गृह्ण २ स्वाहा ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं
॥ वायव्यं वायव्यं वलिं ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥
नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥
नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ गृह्ण २ स्वाहा ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥
॥ तत्तावत्तावत् ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ गृह्ण २ स्वाहा ॥
नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ गृह्ण २ स्वाहा ॥
नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ नैऋतं वायव्यं वलिं ॥ गृह्ण २ स्वाहा ॥

[illegible]

क्रतु सर्वदा। स न भगता यदं न र्था सर्वभगदु लय दं। या न दं मत्तः
 या कर्म यत्क विद्या मिय लुगं। वलि यय यदा न न संकु स्य म स चि नि
 ता। सर्व कर्माति सि द्धनु सर्वदा सा। य धनु म। विव ध कि य सा द न धी
 कृति का ना क न मा म्य ह॥ नैऋत म म लु म लु यी (०) ति ॥ ॥ इति स म यः
 वलि ॥ ॥ नैऋत म म लु म लु यी (०) ति ॥ ॥ इति स म यः
 व्या धु ध म म लु म लु यी (०) ति ॥ ॥ इति स म यः
 ॥ नैऋत म म लु म लु यी (०) ति ॥ ॥ इति स म यः

स्वतः (०) म म लु म लु यी (०) ति ॥ ॥ इति स म यः
 गा ना या उ ठ ला धा र का ना ध म र ध न ॥ ट क या लि धी धा नू व धा नाः
 म ना ट ट क धु क ॥ धा जी का ना र डि धा का थ वि ना द नू न रु था। ध न धाः
 ना म क धु ध य च धु रू ट काल क ॥ वी न सिंहा रू कू ना ला म ध रा स
 न य म क क ॥ ना वे न ध न म्मा सा वृ धा न धु क धु क ॥ म ज ला क स ना
 क धः कू कू क ॥ क य ध रु था। य धा धा रु ग या ला ध नू य धा स न मा रु
 न ॥ य धा धा रु ग नि धि य धा स रु कि ता। च रु वी कू ग या रु ध रु

ववाहवध्विर्ग। वृथकं हस्तु यः सर्वकं कायविन्दुः। अजना
दिमहाकुरु ककावाकं तमासाहं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिकुरु
वालाअवलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥ ॥ नमः ४ वशिष्ठा
शान्तिः॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥
धारासीमासीमासहावलिं॥ अयाचविजयाचैव अजिताचायनाजि
ना। महाकायविन्दुवाकीं उक्ताकागमागका। जागहानिसेकात्री
वदं हानीमुक्तावती॥ विद्यली पृथ्वानीच अगनी गम्य हानिनी॥

रुद्रकात्रीसुहृदाच रुद्रासीमासु रुद्रिका। दारिं हानुमापुष्टाक
रुद्रिकायालक्षलिनी। दारिं हानुमापुष्टाक रुद्रिकायालक्षलिनी॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अजनादिवलिं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥
स्वाहा॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥
वलिं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** अजनादिवलिं॥
असीमा कालीचैवाष्टकासुथा। दिव्यशान्तिनीमहाशान्तिनी सिद्धि

था नीग (लघ्वत्री) साकिनी कालत्रा विचुद्वकणी निष्कत्री गंगी
 राधा मिणी सुलाय वनाही उभानिका। सीमली चमकान त्यावा ला मुखी
 तथे वत्रा मिणी वीरु किनी चव यदली धूर्जटी तथा विमरुद सर्वसि
 द्विष्टि ॐ च्छाग (धेवचो) दूका नीरा खत्री दीर्घा धूमा ककन रुषि या
 (माराही) कालदृष्टी चतुर्था विमनत्रा केकी। नाकणी धावना चनका।
 की विष्णु प्रियी। अथ कत्री नोदरु सी गुक्का मीतन गाजनी। वीनर
 वमहा काली का काली विद्यमानता। कोट लारी मरुदा च वायु वंगल
का ३

आनना। वाक्की चवे सुवीचे वः चञ्चिका लुणी ध्वनी गथा। वात्रा हीता वः
 सिंही च विवदृगी चरुः षष्ठी का। ॐ दं दत्री महाया मी वलिं गृह
 नुमं सदा॥ की च वषा थि या गिनी या वलिं गृह २ स च वषा निं कुन
 २ स म सिद्धिं कुर्वन् कुदू ३ रुट स्वाहा॥ ॥ ॐ शि च वषा थि या गिनी॥
 ॥ तत्ता महावलिं॥ नंदी धी धुं कुं या यृज ॥ धी गुनू या दू कां यृज या
 मि॥ नं कर्तुं कू क्काम नृयं यं न विमनजठालयी ॥ अथ न्या मका

[illegible][illegible]

अणि (अ) रा आ म म (अ) स न व व न व य न ग क वा ख ख स य म । आनि कु म
कु जाम्बा वि वि ध व ध नू गां मा रा न र्मं तु स र्वा न सि द्धा रु द्ध स म सि द्धा वि
वि ध व ध नू गां दि यो सि द्धि द द नु ॥ ७ ॥ ख म्भो म नु सि द्धि य न य न वि
स न श्व ग ति ला च न म्बा ह मं र्मं रं वि यु ध व लि य वि क र त लं रु म्भे न
स र्व वि द्यां । दी र्घा यू र्ण क वि त्वं न म नि धि गु टि का या दू कां का म सि द्धिं
स र्वो चि ना द द नु अ लि व नि वि नि ता रु न थाना न्य यु का ॥ ८ ॥ इ य (अ)
आ नि म र्मि य द ग ह म ग (अ) वि नू त्या रा न व (अ) वा उं वि द्या न रु लो य वि
त्रि

य ट य रु रु रं आ धि रं च र्म मू र्मा । कू कू रु ट का न य की रु रु रु रु रुः
सि रं च र्व य की धि व नी रु द्धा नि म नु मा रा कि लि मि लि वि कि ली की न रा
आ नि व नि ॥ १ ॥ सा रु का का म नू या अ ल न व व ह म रु सा रु द दू का ल ना
दा उ रि रु नी ल क रु अ स न स न द या वि नू नी दा य स का । रु रु रु
का न य की नू नू धि न व सा व डि ता न म म म्भ मं ग ला ला क या ला ग म
य म न ग ता या धि रं मा न्य यु का ॥ २ ॥ वि र्वा ता नू द ह कि रु च दि रु रु
वि रं री म धी सि धि नू या चा मू रु रु नू या द ह दि धि य क टा कू रु लाः

रथायसिद्धा। आका। (६) निर्ययूका उदधिकूलवधिमालनीविन्दुदं हाः
 आशाननिर्यसंस्काकूलमकूलमयाथागचक्रयविद्या। २॥ सुत्रांश
 रासयकीअयत्रयत्रगतादिहाकाविरित्वादिआस्नालाकयालास
 कलरानूगतायी० आसझलाखा। धाक(६) चययकीकिरुवहजननी
 म(६)यी(०)गमास्नात्रकस्वदं वदवीहिवय० समनीकालमा(६)यः
 हाका॥ १०॥ नाम्नाहीकृष्टिकाखाकृष्टिलरानूगतामनुयी(६)ययी०
 दकि(६)सिद्धिआग्निगदनूनविशूणामधुलायूधुयी०॥ कामाखाका

कूल
 कनाखावदूकूलविधिधैसंस्किगास्नातसिद्धंयातात्ररुमिस्व(६)वि
 ऊयगिवसूधाभाकलकीकूलाखा॥ ११॥ उकिछाउद्वधममुंठतिटि
 टगयंककयकीसमस्कायीदूकालवीऊंवलवलदालितायूधु
 मासयदस्का। साऊखावामयीदूउवलकसदयासकितासयकुरुदं
 सनुस्ययऊरुदविमलंगगायऊवतासमस्का॥ १२॥ उकाधनेक
 रुदंरिय० गतिगूताअयूआमागजामीदमादमासूदुमाचलः
 चलविचलायसूवनीरिकाध॥ धाकिंसिद्धियदकिंनूनूधिन

[illegible]

गा। नै। नै। कात्रमृत्तिगुग्गुलुगुलुगुलाथानिआध्वनचक्र॥ १५॥
कांकाकात्रम(ध्रुव)रुटरुटस०जासाध्वनिंगसूदीकांतीतीतीकात्र
नक्षीकिनि कि नि कि किनीयूर्ध्वकान्नप्रस्वादीदीकीकात्रयन्त्री। हां
हांहाकात्रहामरुटरुटरुटसिताहाटकसून्दचकी॥ १६॥ वरीहीआ
गमा(र्जय)नविषूनगतादिव्यक्षादीसमूहोआज्ञाचक्रयविष्टाहं
ठञ्जनमेनमेहीखिनीहीखयूका। यी० स्थाभुगर्मस्ठाऊअतिरुग
वरीयी० मालिन्याकुलीरक्ताहंनिशमवापुष्पमतहिन्नसाधवरासू

लिहतां ॥ ११ ॥ ओं ह्रीं कीं स्वाहा या यू ॥ आय दहि धैर्न दहि यूग
नृद हि गये वने ॥ धन विद्या य (अ) दहि सर्व भक्ति कृन् २ वलि गृह
२ स्वाहा ॥ १२ ॥ कम स्व वन दाम म ॥ ॐ ति म हा वलि ॥ ॥ तं क कां ती कृ क
गुयाला य वलि गृह २ स्वाहा ॥ तं क ह्रीं की कूल यूग वृ क नाथ य वलि
॥ तं क म मी यू ग ॥ ह्रीं कूल ग (ह) व य य वलि ॥ तं क कृ मे का का ना य व
लि ॥ तं क म ह्रीं सिद्धि वा म ह्य य वलि ॥ तं सर्व श्या रु र श्या वलि गृह २
स्वाहा ॥ तं सर्व श्या धम (ग) श्या वलि ॥ तं सर्व श्या य क ना क म (ह)

श्या वलि ॥ तं क म का म वा वन वा य व ग म (ह) श्या वलि गृह २ स्वाहा ॥
तं सर्व श्या ग रु न कृ ग (ह) श्या वलि ॥ तं सर्व श्या दा कि नी श्या मे ले वलि
गृह २ स्वाहा ॥ तं क म मी वलि गृह २ स्वाहा ॥ तं क म म कृ म कृ यी (१) ति ॥
तं क ड का नू क रि ॥ ॐ ति वलि ॥ ॥ व न ना दि सि न्द्र व य श्या
य वी न य व धू य ॥ य दी य रु ल ने व य ॥ या ध य य डी म धी न त
य ति दि न या ना य ध क्का य न आ य ति स्थं न न क म धं दा रु न य रु य
थ न ॥ ऊ य मं क ल्य या य ॥ गु आ रि गु कृ य व रि ॥ ऊ य म म य न ॥ का गु ॥

[illegible]

गङ्गाकङ्कश्रमाः कृष्णसङ्कतः उच्यते ॥ मन्त्राकङ्कश्रमाः स्वामनजयनया व
 द्धवर्कः ॥ कण्वलिकगुखम्विसर्जनं ॥ कलम्विसर्जनं ॥ अरिषककैलम
 ॥ चेदुतसिद्धमोहनीसगुणदवर्कः कृष्णधुनिमंजुय ॥ स्वमसंजु
 य ॥ यजमानोऽरिषकचन्दनाद्यामीवाद्यधुनिविसर्जनं दर्शनं ॥ नव
 मण्विसर्जनं ॥ धवापिसंजुय ॥ कृष्णविसर्जनं दर्शनं ॥ वर्णमार्गद
 नननगर्गकालरुवायुयुद्धं सानुस्वात्रं पिशुवणगुनं मुमुनं ४ स्यसि
 दं ॥ ७ गम्यन् यदिलिखि गयाकालयिद्वा गयमूपां सुपयं जगज

१ म ॥ १०१ म ॥ १०२ म ॥ १०३ म ॥ १०४ म ॥ १०५ म ॥ १०६ म ॥ १०७ म ॥ १०८ म ॥ १०९ म ॥ ११० म ॥

लयं यननामं यानु ॥ ॥ दिव्यायनं ॥ धृवमदादिम ॥ दकि (ध) मृवा
 ॥ यन्निममृल ॥ इरुत्रमंम ॥ यामनधूनकावोपि स्कावनजायाय ॥
 वाक ॥ विजयं प्रोथला गमकमायविजयायवा ॥ धकयकविनाधाय
 यूननाममनायच ॥ धर्गवाकधूनकाववन ॥ वायथायः धाकमाका
 त्रिकां धः काकावधामः सातिपूयक ॥ मरुदकाजानक धत्तादि ॥ महा
 कालवलिहवतयाव कुाय ॥ धर्गधूनकावचा मरुवलिथानमकु
 य ॥ महालवलिहवत दिगमवला स्कावकलह्याय ॥ कुरुवलिधव

माय निमाकासः ॥ १०१ म ॥ १०२ म ॥ १०३ म ॥ १०४ म ॥ १०५ म ॥ १०६ म ॥ १०७ म ॥ १०८ म ॥ १०९ म ॥ ११० म ॥

कइसवकं वाय ॥ यत्रिवानवलिथव ॥ २थममकुय चानिवलिचानि
 मं ॥ मरुकावलि मरुकावमः महाकालवलि महाकालमं ॥ ग (ध) वलि
 ग (ध) मं ॥ कुाय ॥ रुनूमकवलि नुतमिम ॥ यश्चवत्यादिथव ॥ २थम
 कुाय ॥ ॥ ॥ जि ॥ जाणधूनकावलि कावयावः निर्मदुनादिलं स्वस्यं इका
 यावः रुगसयाव ॥ धर्गधूनकावखध्मथममं ॥ धनरुटमं लाव
 समयकायमनयराय ॥ कलंकाकं ॥ ॥ जि महादधमिपूजाविधि
 ४ ममाय ॥ ॥ ॥ ॥ धनया कलिवकक निमीलादकाकाकाः

मं धासः रुवयास याय ॥ १०१ म ॥ १०२ म ॥ १०३ म ॥ १०४ म ॥ १०५ म ॥ १०६ म ॥ १०७ म ॥ १०८ म ॥ १०९ म ॥ ११० म ॥

यावः धकि सत यावः धन लि रि का यावः रि या धाय स ग र्य व यू ज धू
 व दी ज य स्का र्ण ॥ ग र्य व अ रि थ क च न ना यो धी वी द ॥ वि स र्क न ॥ नि
 म्मो ल्य थ न स वा च क ल थ ॥ स म य रा र्ण ॥ ध न लि ख धु च य य ॥ ख
 प्र थ य स र्ण ॥ ॐ नि च रु धि या य वि धा नि स मा क ॥ ॥ ॐ म मु ॥
 (व द ग्राम यो य नि धा नि थ ॥ स य न क र्ण य व ल ख य इ का या व थ य स र्ण ॥ य थ क वि धि
 यू ज ड प स्का र्ण ल ध न क ॥ य यु र्ण ॥ स र्क ॥ वा क ॥ ग यो ल ॥ वे ग रि ध न अ न्ना सि वी
 द ॥ आ स स म र्ण ॥ ग यो ल ॥ न्या स लि न ॥ व ति थ य म ग व ॥ स र्क य स र्क ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 न व मि या वि धि य यु ग य ग ल्व ध न क ॥ ग यो ल न्या स ती न स र्क य स र्क ॥ ॥ य वि वा न अ क

न्यास विधि ॥ न्यास विधि ॥ न्यास विधि ॥

ॐ धी च रि का यो न म ॥ अ ख धु म धु ला का ल ति ॥ अ यो क र्ण ॥ न का वा ध
 व नू र्ण ॥ वि धु ल (ध न व र्ण ॥ ध्या मा न का ॥ म धु र्ण श न धा न ॥ ख म्म म क
 सि ध ति ॥ ॥ म (ध धी ड ग व धु क न क धि नि व य वा क र्ण य द (ध क ख
 न र्क टा दि ध क म रि य नि द सि ग व क वी ज यि धु र्ण ॥ म धु र्ण का ल ल धी
 व क र्ण धु र्ण गो स रि मू लि स वि न्द ॥ सि र्क र्क च रि न धी रि रु व न क न ती
 या रु मां मू य च धी ॥ ॥ व र्ण र्ण यो च ना रा अ नू ध मि व नि रा क र्ण ती
 ला रि मा रा धु मा रा क म व र्ण सु टि क र्क र्क नि रा वा क र्ण य रि क ता या

पुर्वोद्या नृपचक्षुः मृदुदधिरुग्मी खड्ग माया सुखमरा द्योद्योयीभक्त
 नाञ्चदविदत्रमथनीयारुमा मष्टचक्षुः ॥ ॥ यीताकायायनीसाः रुत्रि
 महिमसमीकृत्य जितुं नृणां खड्गवार्तचक्षुः किंदिगितनयकुयी धूलच
 कंसकायः रुटत्रायं धृष्टिर्वै रुवहुदधतिवै यावकीभश्रुविन्द धूलने
 मालिकरुष्ट्रमहिसत्रिथायातनीसमुयाकी ॥ ॥ दत्रीकुयाया विजयाति
 ताख्याः यनाजिताऊं रुत्रिकात्वेनैता आरुमृतीमाहिनीकांतेथैवः आक
 र्षणीतामूदमायूवकु ॥ ॥ त्रकाधीगुम्बुनधी रुत्रिमहिमसमाकाकि
 तथेवकर लेनेनर

(५) नीधूलवागीः वा रुस्यास्थसम (५) त्वसिमयिसूकत्रे ४६ कि वीऊं धृष्टि
 ॥ दकसो मृथवदंधनतिधुरुहाता ३३ धूलसचकं वामं रुटसूयाहंद
 नृजकुलकहं जायसंगकुनी आनिमाल्यं दय्येधं कुरुदमनूक अंगलायु
 लंका अकं सातान्दवीनीमिनिधं रुयसकनरुद्रीधरुदय्यांककात्री ॥ ॥ (६)
 वाञ्छीथानरुनृयी वहुविषिधधनादौ देवोचिनाचनो दीकीमात्री कीली
 कामाधिवरुमधूमयं वेसूवीगमयमाना वावाहीवादयनीयदूतत्र
 मटहा नृत्यमानं तथेदीचामुष्मचायलक्ष्मीरुत्रगलसहिता मातंगीः

नः पूननु ॥ ॥ कर्तुं कृपा विनाथं सकल रुय रुतं चाग्निका (६) मूसं सं ।
विद्या कं विद्या नाथं निविच वरु वन का धर्म मध नूरु । वागवा वाल न
मं गि विव वरु न या न न न व क का कं श्री धन्या च छि को वे रु व रु य रु न
धं नो म्भरुं सर्व दाहि ॥ ॥ द व द वे धन न व धर्म वा ज वा वि च व ध म्भ
य गि । म सी न ॥ ध ना धि य सु म्भ क क ध व ध्र पि ता म रु रु रु रु दा रु व
नु ॥ ॥ धी मा न धी सकल न्द रु गि वि म ला धी काम धम नि यु दा वि धा
सा रु नो क रु न नी ज ग्म वि धा धा मि का । गा नू धा मृ ग वा ल यु रु व लि

मा सं चिं य ला क रु यः काला मृ लू य व ऋ ता मि रु य न धी सि धि ल ल्मी य
वा ॥ ॥ व नो य धी सकल गी र्थ रु ल न यु रु स रु य य न व म्भ रु
ग य य माल । य रु य आ रु वि य अ मृ ति रि रु य म रुः नं कं रु मृ लि नि
ध वे कि य रु न मा मि ॥ ॥ ला का सिं दू न व रु रु ज व रु स म नि रु न क
व रु पि न रु वि रु सा रु काली रु रु व रु रु न नी द रु य दा नि रु रु रु
वी न धम न्द रु रु की व रु म धू रु क नी क रु रु नि य सि धा सा न न्द द रु
ना ना य व म य व य वा या रु सा वा नू धी न ॥ ॥ रु रु रु ला रु रु रु

यूकमसिवात्रचिन्द २ रुगवनन अमूक वरु निआयअमि २ कांकांका
यांयांयांकां रुट खाहा ॥ ३ ॥ यत्रिवात्र अमि तांमदि वक्रा ध्मादि ॥ ७
तिरुनूशेनव येजा ॥ ॥ कुरु यजा ॥ त्रैक कां ददयादि न्यास ॥ आः
ध्मादि ॥ त्रैक नवा सायवा यजा ॥ त्रैक कांकी कू कू कुरुवाला यस्व
कि सहिताय स्वय त्रिवात्राय अशु अलियूर्य या यै यजा ॥ कां ददया
दि ॥ अमिताभ्यादि वक्रा ध्मादि ॥ ७ ति कुरु व लि ॥ ॥ महा
कालवलि ॥ त्रैक मां ददयादि न्यास ॥ आध्मादि ॥ त्रैक महाय नास

नायवा यजा ॥ त्रैक दं महाकालाय अशु अलियूर्य या यजा ॥ त्रैक दं महा
कालाय महाशेनवाय ७ दं मसाय यधूय दीय यजा वलिं गृह्ण २ खा
हा ॥ स्वप्न मदाय त्रिवात्र रु रु कादि १० ॥ ७ ति महाकाल ॥ ॥ ग (६)
व यजा ॥ त्रैक मं ददयादि न्यास ॥ आध्मादि ॥ त्रैक मृषा मनाय या
यजा ॥ त्रैक मं गी नू गं (मू) ग (६) ध्वनाय सिद्धिदाय नी व कि सहिता
य अशु अलियूर्य या यै यजा ॥ ३ ॥ मं ददयादि ॥ यत्रिवात्र ७ द्यादि
वक्रा ध्मादि गऊ म दा ॥ ७ ति ॥ ॥ श्रीविद्या मूल दवी या विधि ॥

धनकाथेसयविवात्रथंकायमालः यत्रि(६)सथययाधानश्रया॥

ॐ नमः ४४७७ कोये॥ अष्टिचिप्रउवाच॥ विनाठनगत्रनमयवि(६)सयष्टि
चिप्र४७७७ सवमनसायत्रीः इन्मक्तिरुव(६)वत्री। य(६)दागकसंरुताः रुत्र
४७७७ गिनीयिया॥ नन्द(६)यकूलजाताः मांगलाकूलवद्वती। के० विदाववक
त्री अमृताक्षं कर्यं करी। रात्रावगत(६)यष्टिः अमृति सदाहुरुं। गंयातात्र
यत्र वही जातकिनचद्रुकरां नभाः सुवप्रयकषूः कीमात्रीयिअदधनी। वा
लरात्रमहात्रीदीः यष्टिलिविकथाकटी। चहुकुं चहुवकुः चहुदक्षुमरुं

७३

वत्री। ॐ कात्रीविकटीसीयाः महासूत्रविनाहिनी। उयक्तिविजयकषूः संः
यमविजययदं। कालजाणीमहात्रीदीः अष्टमीनवमीयिया। कयिलयिअल
कालः गयकाअनसन्निश। गहिस्थयसमागस्यः विद्युक्कलितकहुल। मन्
विन्धनप्रगतः अष्टमीनगन(६)विश। कालिकालिमहात्रीदीः सूत्रासांसवलिः
यिया। विहूलप्रविधीद्वीः चित्तगीरुवनध्वनी। दवदवाधियुयंत्वं यष्टुमा
ष्टिअष्टुद्वी। इन्मकात्रयगं इन्मविन्धनालिमहाहृवा७। मोरुंवाअय
त्रिजुष्टः सुहृकाथवि(६)यग४७७७ हि० नंवाकसुवद्वीसूत्रध्वनी। गहि

मांयद्वयगति सत्यं सत्यं वदाम्यहं । दर्शनं तु गतादधीः इन्द्रावनमवव्रीण ।
धृष्टवत्समहावाहः संयममविजयकरः । मन्यसादादिनिर्दिष्टः कृत्वा को न
वाहिनी । निःकृष्टकृष्टं नार्थः । उग्रसंयमगुणिः । सह । इन्द्रं गुप्तं सर्वं स्मरं ।
यद्विष्णुं यायनाशनं । अयं कृतिनत्रास्तुम् । नरुयं विजयं कृत्वा । यस्तान्वा
यवाप्तवायः । कृष्टिमास्मन्निष्ठा । तस्याहं सकलां वाधां । नमश्चिष्टा मिवाधु
व । अष्टिष्ठिनकृष्टं स्मरं । मिदं यथा । समहितं । यथा कर्मधुलं कृत्वा वलिन्द
त्वा विधानतः । गृहसंक्षयः । अमुं कलवधिकं न रवः । कर्मसंक्षयः ।

अमुं सर्वसंक्षयसमृद्धयः । गुर्विष्टीष्टवयं कृत्वा क्वं यत् । पुत्रायतः । विः
याधूलस्य यधुना गुहवानर्थवानरुवतः । प्रोमर्तामयतं प्राग्मद्वक्षामय
निवन्धना । कालया । नतयो वदानीतार्थिजमकि कृते । सखत्वाय भूतस्तु
गं मय्यत नागसंक्षयः । इति विनाटस्तुर्वसमार्यः ॥ ॥ नमो रुवाभ्यः ॥
इन्द्राकिं द्विगुजान्दवीः यीतवस्तुविजिगीतः । वामरुस्तुवज्रधनाः यद्विष्टव
लयदा । इन्द्राकिं सरुयवतीः नाना लंकालरुषिता । यमनवदना क्षायं अय
प्रागवष्टविता ॥ इन्द्राडवाय ॥ इन्द्राकितामसादवीधवती समुदाहता । (म)

नि सा क मू वी द वी दू र्गता मी ति वि धू ता । का था य नी म हा द वी च धु द ध म हा
त या । सा वि गी सा च ग य गी च द्वा धी व द्वा वा दि नी । ना ना य धी रु द का ली नू ज
धी क मू पि म ला । अग्नि काला म हा त्री द मूं वी काल ना गी त य खि नी । म द स व ना
म हा सा की । वि क टा या उ ली द नी । म हा द नी मू क क धी । धाल नू वा म हा व ना
। अ चू रं रु द उ न का ना ग रु क णि व पि या । ॐ नू द धी ॐ नू मा ता च ॐ नू ध
कि रु ना म य । धि व दू री क ना ली च ॐ म ध य न म ध वी । धृ ति स्मृ ति धृ ति म
ध । वि शाल श्री म न स वी । अ न का वि ऊ या य धु मा न सा वि का य ना जि ता ।

रु दानी या च ती गो त्री रु म व त्वं वि का णि वा । नू री ना म हा र सा रं सु ता ध क ध धी
म ता । हा र सा व रु थ य नू म चू र वा धि व ध ना । आव रु धे म रु से सु ल रु त
वा च्छि रं रु ल ॥ ॐ ति ॐ नू द धी सा रं स मा र्क ॥ ॐ न म ध य धि का यी ॥ दू दू
दू दू र्गता य वि रु व न ध त्रि रं धा न धा ना ति धा नं मूं मूं मूं सा न चू दं दू ध त्रि रं
य त्रि रं इ र्ग कू दं य च धु । ॐ ॐ ॐ ॐ का न ना दं वि रु व रं वि रु यी सू त्र सं य म वी
दं यं यं यं या य ना धं रु ग व ति व न द सि धि च धु न म र्क ॥ १ ॥ चं चं चं च धु द द
च कि म कि च कि रं च अ ला इ र्ग न रं रुं रुं रुं का न नू र्यं य रु णि र व द नं स व

[illegible][illegible]

लीय। यंक जाता शिवाय च वेने नू नू नू नू कायिनी क छ क छ कं काली काल प्राणी रग
 वति वत्र दसिद्विच (छुन मभ ॥ १ ॥) की की की कात्र नाय शिगु वन धत्रिगं यात्र यात्रा
 गिधार्त्र कं कं कं काल नू यं ययत्रिग यत्रिगं धं धं मात्री क मात्री। धूं धूं धूं धूं सवधूं
 उमति उमवत्रं काल मा धं शि धूलं तं तं तं तीव नू यं शिगु वन नमिगं शिद्विच (छुन
 मभ ॥ २ ॥) की की की कात्र दयं ययत्रिग महि मात्रा मरुभ क यात्रं खं खं खं खं दाम
 रुभं उमनूति मित्रि मा मू लु माला मू (मभ ॥) नू नू नू मू लु माला रुत्र दयिगु मिगा
 दीर्घ जिह्वा क यात्रं द वी धी उगु च धी रग वति वत्र दसिद्विच (छुन मभ ॥ ३ ॥)

ॐ शिद्विच छि का रुवं ममायं ॥ ॥ ॐ नमश्चि काये ॥ ॐ नमो भूत मदा द
 (नमश्चि क च धु वि क म। वि (मभ ॥) वी उग द्या शि मि सं हात्र कात्रिणी। सच सिद्धि
 कत्री द वी उग नू या व गात्रिणी। दू र्ज यत्रिजिगं रुदं मरुवे त्रि वि नाहिनी। त्वं धी
 ह्वदी रुभाल जा त्वं वी जननी यत्रा। यद्विगि ह्वं गुध मायि मू लु ग य सवू यिणी॥
 ॐ कान्तर लया द वी की कात्र यत्र मा मनी। रुकात्रं च उ कात्रं च उ कात्रं वि नू मं
 यूरं। द (नमश्चि क च धु वि क म। वि (मभ ॥) वी उग द्या शि मि सं हात्र कात्रिणी। सच सिद्धि
 कत्री द वी उग नू या व गात्रिणी। दू र्ज यत्रिजिगं रुदं मरुवे त्रि वि नाहिनी। त्वं धी
 ह्वदी रुभाल जा त्वं वी जननी यत्रा। यद्विगि ह्वं गुध मायि मू लु ग य सवू यिणी॥

यव (छु) विव न्य म ७। व ह म द्द वि खा यां चः त्वा मां क व च न नु । कं का र्त्त न न र रु द म
रु द म नु सु मु च म क । न म ४ स्वा हा वी म र्द कं व म र्द चै व रु द म क । म उ म म न य
का नां गृ गु यू ज म म ध्व नी । द्वा वि ष म क ल म हा वि श्याः यू ज इ म्मा च म ध्व नी । कं का
न ग जि रं ना दं रु य स्या ति रु यं क नी छे ला क उ न नी द वीः यू य धू या नि ग र्थ ले
१। व लि रु ल्या दि रि यू का यू ज नी या य हा न के ॥ स न काल म हा यू ज म हा स्या धि
वा मि नी । न व सी श म यू ज च द ह म्या चै व च न य ७। वे त्रि म र्व वि ना ष म य ज य नृ या
व ता वि णी । रि म न्धं य ४ य ० ति ल्यं म क वि ग म मा हि त ॥ १। १। त मा व र्त्त य अ सु म उ

न स र्व या त के ॥ म हा म य म उ य नी वि य क द ल ना मि नी । स द्ग म्मा व क णी द वी म
हा ल क्सी व ता वि णी । य ह्मि ता वा म हा या त म हा त्या त रा व क नः म हा व न ष म ष म न वा
है मे था ना मि क यू च । न (१) ना उ कू ल दू न वि वा द वि ज यी रु व ७। स न व म ता वि
णी द वी म्मा न स र्व या त के ॥ च छु य क ग म व र्त्त नू द य छु य का दि रि ॥ म हा द
(ग्न) ध्व नी द वी द ग य छु न म ३ सु त ॥ १०० य य छु म न म्मा सु ति स मा र्क ॥ ॥
ॐ न म १ ग व र्त्त ॥ या स र्ग किं ति सं रु वे क उ न नी ति ल्य स र्ग वा द या आ द र्वा न रा
ना वि द र्थ द न वी वि यू क ता रा वि नी । या द्म वि खा क या ल क र्त्त क ध्व नी कं का ल मा

लाकला सादवीरुवतामममलरिदरुयासयाशेवदी ॥ १ ॥ यादवीमहिषास
 नस्यनृधिनैर्महादहामसवने ॥ संगकृतस्यिषाचरुवववलदतालरुतयने ॥
 नृयनीदनऊलुदययदनवीवदरुमेयता याविष्वस्तितिकात्रिणीरुगवरी
 कायायनीयाहुव ॥ २ ॥ याकालीवलकालिनीकिलिलिलावावतुरुसनीकिल
 कीउनीकटयुतने ॥ कटिलसककालमालासवे ॥ कीलालेनसूयुचकदलने
 कीने ॥ समुन्मादिनी यायाद ॥ सतिषुमुमुमथनीवावात्रिणीसाध्वरा ॥ ३ ॥
 विशुत्युंऊकठाववववकच धूलायिसामाननखसध्यानृविनयथप्रविष

णीयागायनचक्रया ॥ यस्याधुकविषालकाटवललज्जिदाहुऊंमगधरीमारी
 मधनृयिणीसमुदरीकायालिनीयाहुव ॥ ४ ॥ सर्वकृककनीनुकृदिवसना
 नागदुहावाझदा यधनृयुनकिंकिणीववपृवपुंकात्रसंवात्रिणी ॥ मानन
 धधृमप्रयुगतनेलिनासवामानायावा चधुंरीववचधुमधुमथनीचधुसदा
 याहुव ॥ ५ ॥ यादियाझदकलपदवसनाध्वि ॥ सदावदिताआगदन्नकिनीटि
 कूधुलधवाकयुनहावात्रिणी ॥ आसुधुंजुतिनंमज्जारनयनासीमासुनृयाहि
 वा सायधननगमिनीरुगवरीनित्यासदायाहुव ॥ ६ ॥ यादिवी ॥ सूत्रसिद्धि

किं नय गले संसद्यमाना सदा आगीन्दि यत्र मानय कृति यत्रे तालाकिता या यत्र
यस्यां विष्मिदं च वाचन गतं संग कृतं सरुव सावां कुरुल सिद्धि कुरुव तां
धनका उ गत्या यनी ॥ १ ॥ यस्या ॥ ६ ॥ किं न वि किनी शि उ गता म क स्वयू या धि सा य
स्या ध्या यि उ गत्य का ध म ग म य स्यां यून न्नी य ग ख द्वा धी ति यत्रे ध्वनी ति च रु वा
नी ति य धी गा ग म ना ना मार्ग न य म य वि रु वा वि द्या चि न्द या रु व ॥ ८ ॥ य द्ग
श क मा म कि स र त रं रु क्ता नि ता ता य अ क्ता मा न स मो ख्य सं क न न तां वृ धिं स
मा या ति वे आ यूर्व स धा रं य ॥ ९ ॥ शि स म लं का ता स रं ल य त इ ॥ स्व यं द् वि रं द्

नाम य म तं वे स्यां ध्वनं न व्यति ॥ २ ॥ ॥ ति रु ग व ती सा ॥ १ ॥ रु वं स मा फं ॥ ॥ ॥
ॐ न म ॥ ध्वनिका यी ॥ या द वी म ध्व के ठ रु य म ध नी या च धु म ध्व कि नी : या मा ना म दि द्या
स न क य क नी या न क वी ज स या या सा स रु नि धु म च धु द ल नी या द व द वा कि नी सा
द वी त व न क द क ध रु उ न क स द च धु क ॥ १ ॥ य द्वा कि ता रु ग व ती ख ल नू द च धु
यी ता स ल वि न य ना व य नी न द क । व द्वा दि ध्व य ध व ना च धि न क रु क सा क ल्या न मा मि
द द रु द ल्य वि ना ध काली ॥ २ ॥ या या दि या द रु न का ध नि वा स नी सा ध क्ता दि सा य ध ध
ना व न न क व धु । सा ह ध्व नी ति ग दि ता म नि री स म र्क द वा नि ना ध न क नी धु रु द य

१ यनमयकाशच (धुगुकादिनयनी)

वधु॥ ३ ॥ रुक्मानमामिजननीयमदधुकाशः सर्वोयुधध्वयविरुषितयावृहत्काथे
ह्येयनाशनकत्रीयमदिकसंस्कृ॥ ४ ॥ नीलाश्ववर्धुसदृशानवयोवनाश्रीनेमृषः
कावयविसंस्कृतचानूया। खभादिहसुधवनीनवसकहृत्साहीवधुनायवतीय
नमामिनित्यं॥ ५ ॥ चधुसूत्राविरुप्रमेनोगत्राजसंस्कृः हंसकूकनधवनाः कमना
यताकी। याभाकृष्णदिधनेहीमनिदववंद्याः यायागसदावपूनदिर्दल (भाशिता
सा॥ ६ ॥ वायव्यदिक्मलसंस्कृतिदिव्युयीः रुक्मधुमधुजसमूहप्रचक्रकाशः
धूम्राश्ववर्धुदधनीतवचधुवया सर्वानिहंतिद्रुतिगानीसदाश्रवाया॥ ७ ॥ यत्क

सदिकानिसमलुगयणसंस्कृयीतांचकनकचंयकवर्धुदका। रुक्मगदादिविवि
धायुध (भाशितायादवीनमामिजननीवप्रचधुवूयी॥ ८ ॥ ह्रीं नयैदिकयविः
विरुषितकानिदका। यायद्वकानिजननीमतिचलुकाता। संधूत्रासिवर्जोवावध
कीगदादिरुक्तां रुक्मानमामिनिप्रसाशुवतध्वनीमा॥ ९ ॥ याहीस्वर्यरगवीगीय
प्रसत्सपूयीः सृष्टिस्मृतिः यनमविष्वमयात्मदका। संस्रिभाहिरमनीरुवही
समस्कृः हीमाददाशुदवाहीराजालकी॥ १० ॥ नितवचधुकाशवंसमायं॥